# ये जन्नत नही है तो फिर ओर क्या है .....

दिवानो का मेला है, सत्संग बेला । ये जन्नत नही है तो फिर ओर क्या है ॥
यहा मैरा आना आकर ना जाना । ये किस्मत नही तो फिर ओर क्या है ॥

मिली जब ये महफिल तो कहने लगा दिल । यहा से मूझे उठ कर जाना नही है ॥
जिसे ढूढता था यही है वो मंझिल । कही ओर मेरा ठिकाना नही है ॥
ये तुम से हमारी, ये हम से तुम्हारी । मोहोब्बत नही है, तो फिर ओर क्या है ॥
दिवानो का मेला है ...

नही था नही था तुम्हारे मैं काबिल । किया मूझ को फिर भी अपनो मैं शामिल ॥
मिला जब से मूझ को दामन तुम्हारा । ना मरने का डर है, ना जीना है मुश्किल ॥
कहे दुनिया सारी ये मूझ पे तुम्हारी । जो रहमत नही है तो फिर ओर क्या है ॥
दिवानो का मेला है ...

इन आखो को ऐसा जलवा दिखाया । मुझे तुमने अपाना दिवाना बनाया ॥
तुम्हारे सीवा अब नजर कूछ ना आये । युँ रंग अपना चढ़ाया ओ दीवाना बनाया ॥
ये केसी खुमारी ये हम पर तुम्हारी । इनायत नही है तो फिर ओर क्या है ॥

दिवानो का मेला है, सत्संग बेला । ये जन्नत नही है तो फिर ओर क्या है ॥
यहा मैरा आना आकर ना जाना । ये किस्मत नही तो फिर ओर क्या है ॥

Send corrections to hariomgroup@gmail.com